क्चहरी करना भी अच्छा है। फिर ना करना भी अच्छा है। अगर झूठ बोलते हैं ,सच्च नहीं बताते हैं तो सौना दंड पड़ जाता है। जो बच्चे बापदादा पास रिफ्रेश होने आये हैं उनको बापदादा कहते हैं कि कोई भी संशय हो,....कुछ ना समझा हो, अंदर में कोई बात पूछने जैसी है वो अगर ना पूछते हैं तो नुकसान अपने को ही पड़ता है। संशय हटाकर ही जाना अच्छा है। नही तो वो अंदर में संशय का कांटा रह ही जावेगा। कोई फिर जाकर ऐसे नहीं कहे कि बाबा से मिलन नहीं हुआ। थोड़े बच्चे हैं। कुछ भी पूछना है तो पूछ सकते हैं। जरा भी संशय नहीं रहना चाहिए। बार2 पूछ सकते हैं। बाप कहते हैं कि मैं तो बच्चों का सर्वेंट हूँ बच्चों को पावन बनाने लिए। पावन दुनियां का मालिक बनाने लिए। कोई भी बात में झूठ बोलना वो भी पाप है। झूठ से अगर कोई का कल्याण होता है तो वो पाप नहीं है। अभी तुम बच्चे स्र्ववासी बन रहे हो। सदगति में जाने लिए पुरुषार्थ कर रहे हो। स्वर्ग में जाने लिए कब कोई पुरुषार्थ करते नहीं हैं। नाम मात्र ही कह देते हैं कि स्वर्गवासी हुआ। अब तुम पुरुषार्थ कर रहे हो। बच्चे समझते हैं कि हम बापदादा पास आये हैं श्रीमत पर चलने। आगे चलकर तो बहुत2 आते रहेंगे। और धर्म वालों को भी दृष्टि मिलेगी। देह के सब सम्बंध तोड़कर अपने बाप को याद करो। यहां पर सभी रावण की शोक वाटिका में हैं। आधा कल्प तो अशोक की वाटिका। सतयुग है अशोक वाटिका। दुःख की तो वहां पर बात ही हीं उठती है। अशोक माना ही जिनको कोई शोक नहीं हो। यहां तो कोई ना कोई बात में शोक होता है। बीमार होंगे तो भी शोक होगा। अब बच्चे जानते हैं कि हम सुखधाम में जाते हैं। समय बहुत कम है। बैग बैगेज तैयार करनी है। सब कुछ तो ट्रांसफर नहीं कर सकेंगे। मकान आदि है तो वो तो खतम हो जावेगा। तुम बच्चे जानते हो कि हम नंगे ही आये थे ,अब नंगे ही जाना है। शरीर से मनुष्यों का इतना प्यार हो गया है जो अपने को शरीर ही समझ लिया है। देहअभिमानी बन जाते हैं। आत्मा क्या है वो भी नहीं जानते हैं। तुम बच्चों को भी सदैव याद नहीं रहती है इसलिए ही समझा नहीं सकते हो। आत्मा तो रहती ही यहां पर है। तिलक भी माथे पर ही देते हैं ना। आत्मा है सितारे की तरह की। बाप कहते हैं कि मैं भी स्टार हूँ। मुझे भी कहते हैं कि परमआत्मा परमधाम में रहने वाला हूँ। तुम बच्चों को खुशी बहुत होनी चाहिए। यह है आविनाशी धन। अभी हम बाप से भविष्य 21जन्मों के लिए धन लेते हैं। यही सच्ची कमाई साथ में जावेगी। अभी तुम बच्चे हाथ भर कर जाते हो। तुम्हारी झोली अच्छी रीति भर रही है। झोली भरने वाला है बाप। बच्चे बाप से ही वर्सा लेते हैं। भारत जब स्वर्ग था तो बेहद का सुख था। ल.ना का डायनैस्टी वा कुल था। रामचंद्र की भी डायनेस्टी थी। दोनों को ही मिलाकर स्वर्ग कहा जाता है। यह है नर्क। तुम सभी बातों को समझ गये हो। निराकार को कहा ही जाता है निराकार नालेजफुल। ज्ञान का सागर। बाप ही सृष्टि की आदि,मध्य,अंत का राज समझाते हैं। बाबा वर्सा देते हैं। रावण वर्सा छीनते हैं। तो अब पुरुषार्थ में कदम बढ़ाना चाहिए। कुछ भी बात हो तो पूछ सकते हो। पढ़ाई तो करनी ही है। पढ़ाई भी कब नहीं, बाप की याद भी कब नहीं छोड़नी चाहिए। अपना ही नुकसान कर लेंगे। मान–अपमान आदि सब सहन करना है। प्राप्ति बहुत है। तुम जितना भी चाहो तो जमा कर सकते हो। जमा माना जीत ,नफी(घाटा) माना हार। बाप कहते हैं कि तुम 21जन्म तो क्या 50/60 जन्मों तक बहुत सुखी रहते हो। तुम जानते हो कि कितना पुरुषार्थ करना होता है विश्व का मालिक बनने लिए। इस पढ़ाई में अच्छी रीति लगन चाहिए। शिवबाबा एक है तो उनका शास्त्र भी एक ही होना चाहिए। मनुष्य तो बहुत ही शास्त्र पढ़ते रहते हैं। बहुतों के चित्र रखते हैं। अभी तुम बच्चे जानते हो कि हमारे पांव में पदम है। पदम कोई स्थूल में नहीं है। यह भी भक्तिमार्ग का ही गायन है। तुम जानते हो कि अभी हम तो विश्व का मालिक बनते हैं। बच्चों को बापदादा का यादप्यार और गुडनाइट।